- कृषि आधारित गतिविधियाँ, मधुमक्खी, कुक्कुट, बकरी, सूकर एवं मत्स्य पालन के साथ लाख की खेती को बढ़ावा देना।
- क्षेत्र विशेष के संसाधनों के अनुरूप तकनीकों का प्रयोग कर कृषि को टिकाऊ बनाना।
- कृषक महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना एवं सशक्तिकरण हेतु क्षमतावर्द्धन कर जोड़ना।

केन्द्र द्वारा संचालित योजनाएं

- अखिल भारतीय समन्वित परियोजना (जटंगी)
- बीज ग्राम
- जलवायु समुत्थानशील कृषि में राष्ट्रीय नवाचार (निकरा)
- युवाओं को कृषि के प्रति आकर्षित करना एवं बनाए रखना।
- प्रधानमंत्री कौशल विकास प्रशिक्षण।
- औषधीय, संगधीय एवं जंगल आधारित गैर इमारती वन उत्पाद परियोजना।
- मधुमक्खी पालन इकाई।
- औषधीय एवं सगंधित पौधों की मातृ पौधशाला।
- क्लाईमेट स्मार्ट एकीकृत कृषि प्रणाली।
- जैविक खेती।

प्रत्यक्षण इकाई

- सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली।
- समेकित कृषि प्रणाली।
- अति उच्च घनत्व अमरूद रोपण प्रणाली।
- मधुमक्खी पालन।
- केंचुआ खाद उत्पादन।
- मशरूम उत्पादन।
- औषधीय एवं सगंधीय पौधों की मातृ पौधशाला।
- फलदार वृक्षों की मातृ पौधशाला।
- एजोला उत्पादन।
- कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्धन।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गुमला जिले के किसानों के समेकित विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

डॉ. संजय कुमार

वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला

विकास भारती बिशुनपुर

जिला–गुमला, झारखण्ड–835231

संपर्क : 9430699847

7366082870

E-mail : kvk.gumla@gmail.com

Website : gumla.kvk4.in

Print_Maana Flex Gumla_6203781827

BS No.-07

FY : 2023-24

कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला

विकास भारती बिशुनपुर

गुमला (झारखण्ड)

परिचय

कृषि विज्ञान केन्द्र, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का एक इनोवटिव संस्थान है, जो संबंधित जिले के पारिस्थितिकी, संसाधन एवं भूमि उपयोग पद्धति के अनुकूल क्षेत्र विशेष के कृषि उत्पादन से संबंधित समस्याओं का निदान, उत्पादकता एवं आय वृद्धि के साथ-साथ कृषि आधारित रोजगार उन्मुखी आयामों को बढ़ावा देता है। जिसका ध्येय कृषि उत्पादन लागत को कम करते हुए प्रति इकाई शुद्ध आमदनी को बढ़ाना है जो कि टिकाऊ, स्वीकार्य, सस्ती एवं सुलभ हो। उपलब्ध उन्नत तकनीकी को खेतों तक पहुँचाना केन्द्र का लक्ष्य होता है, जिसे केन्द्र प्रगतिशील किसानों, कृषि मित्रों, महिला मंडलों, किसान क्लबों, जनसेवकों, विभागीय समन्वयन, आत्मा, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से संपन्न कराता है। जिसका मुख्य उद्देश्य किसानों के जीवन स्तर में सुधार एवं मुस्कुराहट लाना है ताकि युवा किसानों में खेती के प्रति आकर्षण बने एवं गाँव उन्हें आकर्षित करें। केन्द्र की स्वीकृति 20 मई 2004 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विकास भारती बिशुनपुर के प्रबंधकीय नियंत्रण में दी गई है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गुमला का मुख्यालय झारखण्ड राज्य के गुमला जिले के बिशुनपुर प्रखण्ड में जिला मुख्यालय से 50 किलोमीटर दूर राँची नेतरहाट मार्ग पर राँची से 123 किलामीटर की दूरी पर स्थित है। जिले में कुल 12 प्रखण्ड गुमला, बिशुनपुर, घाघरा, भरनो, सिसई, डुमरी, बसिया, रायडीह, चैनपुर, पालकोट, कामडारा एवं जारी है। जिसका कुल क्षेत्रफल 529546.16 हेक्टेयर है, जो झारखण्ड के कुल क्षेत्रफल का 6.67 प्रतिशत है। शुद्ध खेती योग्य भूमि 329600 हेक्टेयर है, जिसमें सिंचाई व्यवस्था कुल 67760 हेक्टेयर में उपलब्ध है। जिले में पाई जाने वाली मृदा का पी.एच. 5.1 से 7.3 तक है तथा सापेक्षिक आर्द्रता 50 से 86 प्रतिशत एवं तापमान 4 से 43 डिग्री सेल्सियस तक रहता है। गुमला जिले में औसत वार्षिक वर्षापात 1100 मिलीमीटर है। जिले की कुल आबादी 1025213 है।

यहाँ की मुख्य फसल धान है। कुछ भागों में व्यवसायिक सब्जी उत्पादन तथा मत्स्य पालन की काफी संभावनाएं है, साथ ही साथ तिलहनी, दलहनी एवं मोटे अनाज फसलों की उन्नत खेती खास कर टांड़ क्षेत्रों में संभव है, जिसे किसान परम्परागत तरीके से करते आ रहे है। केन्द्र इन्हीं सारी संभावनाओं का आकलन करते हुए अपने तकनीकी साधनों के माध्यम से आने वाले समय में उपयुक्त कृषि प्रणाली को साकार करने के लिए सतत् प्रयत्नशील है।

अवधारणाएं

(1) कृषि उन्मुख प्रौद्योगिकी के गुणवत्ता का निर्धारण एवं तकनीकी सुधार (क्षेत्र अनुकूल) के लिए ऑन फार्म प्रयोग करना, जो कृषक के ही खेत में उन्हीं क सहभागिता से कराया जाता है। इसका उद्देश्य ऐसे प्रौद्योगिकी का चयन करना है, जिसमें इस क्षेत्र के संसाधनों का प्रयोग किया जाए एवं परिणाम टिकाऊ हो।

(2) किसानों एवं ग्रामीण नवयुवकों के लिए कृषि जनित रोजगारोन्मुखी अल्पकालिक एवं दीर्घकालिन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना। इस प्रकार के प्रशिक्षण "कार्य करके सिखाना" के सिद्धांत पर कराये जाते हैं ताकि पैदावार में बढ़ोतरी के साथ-साथ स्वरोजगार बढ़ाया जा सके। कृषक महिलाओं एवं ग्रामीण नवयुवतियों को भी प्रशिक्षण के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

(3) कृषि एवं कृषि आधारित नई उन्नत प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किसानों के खेत में अग्र पंक्ति प्रत्यक्षण द्वारा आयोजित करना, जिससे लाभ एवं अन्य उत्पादकता संबंधित जानकारी ली जाती है।

(4) कृषि एवं कृषि आधारित कार्यों में संलग्न प्रसार कार्यकत्ताओं के लिए प्रशिक्षण का आयोजन करना ताकि नवीनतम कृषि अनुसंधान में हो रहे तकनीकी विकास से उन्हें अवगत कराया जा सके।

(5) बीज उत्पादन

(6) ज्ञान एवं संसाधन केन्द्र कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला जिले के किसानों को व्यवहारिक ज्ञान के साथ-साथ "करके सीखो" के सिद्धांत के आधार पर कृषि की जानकारी निम्नलिखित विषयों पर दी जाती है।

फसल उत्पादन

- खाद्यान्न फसलों का उत्पादन एवं प्रबंधन
- तिलहन फसलों का उत्पादन एवं प्रबंधन
- दलहन फसलों का उत्पादन एवं प्रबंधन
- चारा फसलों का उत्पादन एवं प्रबंधन
- मोटे अनाजों का उत्पादन एवं प्रबंधन
- प्राकृतिक खेती के माध्यम से फसल उत्पादन

बागवानी

- फलों की खेती एवं प्रबंधन
- फूलों की खेती एवं प्रबंधन
- व्यवसायिक सब्जियों की खेती एवं प्रबंधन
- मसाला की खेती एवं प्रबंधन
- औषधीय एवं सगंधित पौधों की खेती एवं प्रबंधन

पशुपालन

- गौ पालन एवं प्रबंधन
- बकरी पालन एवं प्रबंधन
- सूकर पालन एवं प्रबंधन
- कुक्कुट पालन एवं प्रबंधन
- बत्तख पालन एवं प्रबंधन
- मत्स्य पालन एवं प्रबंधन

पौधा संरक्षण

- समेकित कीट प्रबंधन
- समेकित रोग प्रबंधन
- खर-पतवार प्रबंधन

कृषि अभियांत्रिकी

- कृषि यंत्रों एवं मशीनों के कार्य, उपयोग एवं मरम्मत
- लघु कृषि औजारों का निर्माण
- भूमि और जल का प्रबंधन

जैविक खाद

- एजोला निर्माण
- वर्मी कम्पोस्ट
- वर्मीवाश
- नील हरित शैवाल
- फसल अवशेष से खाद निर्माण
- नैडप विधि से खाद निर्माण

स्वरोज़गारोन्मुखी प्रशिक्षण

- समेकित कृषि एवं पशुधन प्रबंधन
- मधुमक्खी पालन
- मशरूम उत्पादन
- पशु मित्र
- जैविक खाद तैयार करना
- सिलाई एवं कढ़ाई
- माली प्रशिक्षण
- कृषि मित्र
- मूल्य संवर्द्धन
- लाह उत्पादन
- बीज संवर्द्धन

हमारा उद्देश्य

- सूक्ष्म सिंचाई पद्धति को बढ़ावा देना।
- खेत की मिट्टी के स्वास्थ्य प्रबंधन के प्रति जागरूकता लाना।
- मिट्टी जाँच एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड से हर किसान को जोड़ना।
- खाद्य प्रसंस्करण के जरिए मूल्यसंवर्द्धन को बढ़ावा देना।
- बाजारोन्मुखी खेती को बढ़ावा देना तथा बाजार व्यवस्था की जानकारी से जागरूक करना।
- जैविक खेती को बढ़ावा देना।
- जल प्रबंधन के छोटे-छोटे आयामों को बढ़ावा देना एवं जल संचयन के प्रति किसानों को जागरूक करना।